# बहुत हुआ

पानी-पानी
बहुत हुआ
वर्षा रानी
बहुत हुआ!

बादल को अब तो समझाओ
इतनी बिजली, ना चमकाओ,
मरती नानी
बहुत हुआ!

धुआं-धुआं से चंदा मामा
चित्त पड़े हैं सूरज गामा,
धूप सियानी
बहुत हुआ!

भूल शरारत, सब हंगामे
शहर खड़े हैं छतरी ताने
खुशियां कानी
बहुत हुआ!

बाहर कहां खेलने जाएं?
घर में मम्मी आंख दिखाएं–
नो शैतानी
बहुत हुआ!

**डा. हरीश निगम**

# पावस के नन्हे गीत

रिमझिम-रिमझिम
बरसे पानी,
खेलो-कूदो
खाओ धानी।

चमके चम-चम
बिजली रानी,
बादल आए
लेकर पानी।

कलकल-कलकल
बहती नदिया,
वर्षा लेकर
आई खुशियां।

मेघों के
खुल गए मदरसे,
नन्हे बादल
निकले घर से।

टप-टप-टप-टप
बरसें बूंदें,
पेड़ खड़े हैं
आंखें मूंदे।

जंगल-जंगल
नाचे मोर,
खुशियां बिखरीं
चारों ओर।

सब ऋतुओं की
बरखा रानी,
इसकी है न
कोई सानी।

**अशोक 'आनन'**

# छम-छम बरसा आई

मानसून के रथ पर चढ़कर,
छम-छम बरसा आई।
बरसा पानी भाई।

बिजली का तीर-कमान लिए,
बदली की सेना छाई।
बूंदों ने होड़ लगाई।
बरसा पानी भाई।

मचल रहे हैं ताल तलैया,
उस पर छाई तरुणाई।
नदियों में की अगुआई।
बरसा पानी भाई।

ओढ़ चुनिरिया धानी रंग की,
धरती जैसे शरमाई।
शीतल लगती पुरवाई।
बरसा पानी भाई।

सात रंग का इंद्रधनुष,
पड़ जाता कभी दिखाई।
बाजे मन में शहनाई।
बरसा पानी भाई।

**प्रतिमा पांडेय**

# ए बादल जी

कभी गरजते बादल जी,
कभी बरसते बादल जी।
बंदर, हाथी, घोड़े बन,
सुंदर दिखते बादल जी।

दौड़-धूप दिन-रात, मगर
तनिक न थकते बादल जी।
बूंदा-बांदी और झड़ी,
रस्ते-रस्ते बादल जी।

धरती पर हरियाली की,
रचना रचते बादल जी।
इंद्रधनुष के देते हैं,
प्रिय गुलदस्ते बादल जी।

बिन पानी सब सून रहे,
खूब समझते बादल जी।

**राजा चौरसिया**

# बरखा

सूरज को जब रहम न आया,
मेरे खस्ता हाल पर।
मैं बरखा से गप्प लड़ाने,
पहुंच गया झट ताल पर।

बरखा रानी रूठ गई जब
मेरे एक सवाल पर।
आंखों से दो बूंद गिरा दीं,
टपकी मेरे गाल पर!

**योगेंद्र दत्त शर्मा**